ओमशान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष -14 अंक 17 दिसम्बर -I, 2013 (पाक्षिक) माउण्ट आबू मूल्य 7.50 रु.

उमंग उत्साह से मनाई गई मधुबन में दीपावली

माउण्ट आबू। पवित्रता के प्रकाश से दमकते चेहरे, रंग-बिरंगी रोशनियों से नहाया मधुबन अर्थात् पाण्डव भवन, ज्ञान सरोवर, शान्तिवन, आध्यात्मिक संग्रहालय, पीसपार्क, ग्लोबल अस्पताल, ट्रॉमा सेन्टर, मनमोहिनी कॉम्प्लेक्स का प्रांगण, अखण्ड तपस्या से बना शक्तिशाली वातावरण, हरी-भरी वादियों के बीच फुलझड़ियो की रोशनी से नहाता आसमान। रशिया, श्रीलंका, बर्मा, सूरीनाम समेत देश-विदेश के भाई-बहनों की ओर से स्वर्णिम संस्कृति के अनुरूप प्रस्तुत सांस्कृतिक प्रस्तुतियां। ये नजारे थे आठ दिवसीय दीपावली महोत्सव के।

दीपावली के आध्यात्मिक रहस्य पर डाला प्रकाश:- उपरोक्त स्थानों पर मनाए गए दीपावली महोत्सव के दौरान प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी जानकी, राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी, महासचिव राजयोगी ब्र.कु. निर्वैर, ज्ञान सरोवर निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. डॉ. निर्मला, दादी पूर्णशांता, यूरोप सेवाकेंद्र संचालिका ब्र.कु.जयंती, ग्राम विकास प्रभाग अध्यक्षा ब्र.कु.मोहिनी, वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका ब्र.कु.मुन्नी, ब्र. कु. करुणा, ग्लोबल अस्पताल निदेशक ब्र.कु. डॉ. प्रताप मिड्ढा, जर्मनी से आई ब्र.कु.सुदेश, ब्र.कु.चक्रधारी (रशिया), ब्र. कु. संतोष, ब्र.कु. रजनी (जापान), खेल प्रभाग संयोजिका ब्र. कु. शशि, ब्र.कु.शीलू, संग्रहालय प्रभारी ब्र.कु.प्रतिभा, ब्र.कु. वर्षा, ब्र. कु. गीता आदि ने दीपावली के आध्यात्मिक रहस्य पर प्रकाश डालते हुए जीवन में आत्मदीप को निरंतर प्रज्वलित रखने के उपाय सुझाए।

माउण्ट आबू। दीपावली के पावन अवसर पर दीप प्रज्वलित करते हुए दादी जानकी, दादी रतनमोहिनी, ब्र.कु.निर्वैर, ब्र.कु.मुन्नी, ब्र.कु.निर्मला, ब्र.कु.शीलू, ब्र.कु.मृत्युंजय, ब्र.कु.संतोष सेंट पीटर्सबर्ग, ब्र.कु.भावना न्युज़ीलेन्ड तथा अन्य।

तीव्र पुरुषार्थ के लिए किया प्रेरित :- दादी जानकी व दादी रतनमोहिनी ने यज्ञ इतिहास के आरंभ के दिनों को याद करते हुए ब्रह्मा बाबा के साथ 14 साल की अखण्ड तपस्या का जिक्र कर उस समय की अनुभूति कराई और हर ब्राह्मण आत्मा को उस तपस्या की अनुभूति करने के लिए समय के ईशारों को सामने रखते हुए तीव्र पुरुषार्थ करने के सहज सूत्र बताए। बाबा की मुरली से प्यार, बड़े प्यार से अमृतवेले बाबा से मिलन का सुख, अशरीरी बनने की ड्रिल, ज्ञान दान करने का शौक, मीठा व सरल स्वभाव, मृदुभाषी व्यवहारिकता, एक-दो के प्रति शुभभावना व शुभ कामना रखने पर बल दिया।

सेंट पीटर्सबर्ग, रशिया से आए हुए कलाकार नृत्य प्रस्तुत करते हुए

दादी जानकी ने कहा कि शिव बाबा का ज्ञान बुद्धि में संगीत की तरह गूंजना चाहिए। ज्ञान की बूंद-बूंद से आत्मा तृप्त होती जाती है। ज्ञान की रोशनी से आत्मदीप हमेशा जगमगाता रहना चाहिए। ज्ञानप्रकाश से सत्य-असत्य, उचित-अनुचित की समझ के साथ हम अपने अंदर की नकारात्मक, संकुचित भावनाओं को ज्ञान दीप की रोशनी से समाप्त करने में समर्थ बनते हैं, जिससे जीवन में दिव्यगुणों की खुशबू बढ़ती जाएगी। आत्मा रूपी दीपक को परमदीप परमात्मा से बुद्धियोग जोड़ने पर विकारों से मुक्ति मिलती है। अपने भीतर ज्ञानदीप जलाने से जीवन हमेशा के लिए प्रकाशमय हो जाएगा। दादी रतनमोहिनी जी ने कहा कि संतोष धन सबसे बड़ा धन है। इस धन को अर्जित करके दैवी संस्कारों के अनुरूप जीवन को ढ़ालने के लिए हमेशा प्रयासरत रहना चाहिए। दैवी गुणों से संपन्न मुनष्यों को ही देवता कहा जाता है। जिनका जीवन मर्यादित व सुखदायी होता है, जिनकी व्यवहारिकता में देवत्व झलकता है, वही देवता कहलाने के हकदार होते हैं। ऐसी स्वर्णिम दुनिया की अनुभूति के लिए अपनी मनोवृत्ति को भी शुभ संकल्पों से स्वर्णिम बनाने की ज़रूरत है। संगठन के महासचिव राजयोगी ब्र.कु. निर्वैर ने कहा कि दीपावली पर्व सतयुगी दुनिया का प्रतीक है। परमात्मा से संबंध जोड़ने पर ही जीवन में दैवी संस्कारों का समावेश होता है। संकल्प रूपी खजानों को व्यर्थ गंवाने से ही मनुष्य चरित्रहीन बनता जा रहा है। दीपावली पर्व ज्ञान का पर्व है, अपनी आत्मज्योति को जगाने से ही स्वयं व दूसरों का जीवन प्रकाशवान होगा। ज्ञान सरोवर निदेशिका राजयोगिनी डॉ. निर्मला ने कहा कि संसार की हर आत्मा की ज्योति प्रज्वलित करने तक ईश्वरीय सेवाओं में हम तत्पर रहेंगे। त्यौहार हमें एकता में रहना सिखाते हैं। अपनी आंतरिक स्थिति सदैव उमंग-उत्साह से भरपूर होनी चाहिए। इस तरह से सभी ने मिलजुल कर उमंग-उत्साह के साथ दीपावली महोत्सव का आनंद लिया।

माउण्ट आबू। ज्ञान सरोवर में स्थित हारमनी हॉल, दीपावली के अवसर पर रोशनी की लड़ियों से जगमगाता हुआ। कार्यक्रम में शरीक हुए देश-विदेश के हज़ारों लोग।